टैगोर का कथा–साहित्य
मानवता की सर्वोत्तम जयध्वनि

–राम आह्लाद चौधरी

रवीन्द्रनाथ महान कथाकार हैं। उन्होंने अपने कथा–लेखन के जरिए भारत की धरती की संघर्षगाथा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर न केवल स्थापित किया बल्कि अपने विजन के जरिए भारत के सांस्कृतिक समन्वय को एक नया अयाम दिया। यह कहने में अनुचित नहीं होगा कि रवीन्द्रनाथ ने कथा–साहित्य को परिपक्वता दी यानी उन्होंने इसे न केवल परिपक्व बनाया, बल्कि जीवन की कारुणिकता को स्थापित करते हुए यह साबित किया कि जिंदगी की संजीवनी भारत के उपेक्षित–उपेक्षिताओं के दैनंदिन के संघर्ष में बसती है।

रवीन्द्रनाथ ने बंगला कथा–साहित्य को ठोस जमीन प्रदान करने का दृष्टांत स्थापित किया। कथा–साहित्य में उनकी वाणी इस तरह गूंजती है, जैसे किसी रणक्षेत्र में किसी सेनापति का शंखनाद होता है। दरअसल रवीन्द्रनाथ कथा–साहित्य रूपी संघर्ष के सेनापति हैं, जिनकी लेखनी धैर्यवान है, जिनका विजन हर तरह की तुच्छताओं को दूर करने का सार्थक प्रयास है। रवीन्द्रनाथ का कथा–साहित्य हर दृष्टि से अनुपम है। इसलिए कि उन्होंने अपने कथा–साहित्य में अपने अनुभव को न वकील बनने दिया है और न डॉक्टर; उनका अनुभव विशुद्ध गांव का एक अदना आदमी–सा है, जो इस धरती पर अपना जीवन जीना चाहता है। जीवन जीने के लिए न वह आदमी लोभ–लालसा की खाई में जाकर गिरता है और न दुनिया की चकाचौंध में फंसने के लिए हर किसी से समझौता करता है। वह आदमी हर वक्त सच की राह पर चलता है तथा संघर्ष से शक्ति का संचय करता है। यही कारण है कि वह आदमी न थकता है और न टूटता है; केवल और केवल जीवन के थपेड़ों से शानदार मुकाबला करते हुए दुनिया में जानदार तरीके से आगे बढ़ता है। उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता है कि उस आदमी में समझ नहीं है या वह दुनियादारी से बेखबर है। वह आदमी इस दुनिया को नई शिक्षा देने के लिए आता है तथा मानवता का पाठ सिखाने की कोशिश करता है।

दरअसल रवीन्द्रनाथ ने अपने कथा–साहित्य के जरिए आधुनिकता को मानवीय चेहरा दिया है। इस चेहरे के बिना आधुनिकता का रूप कुछ अपरिचित लग रहा था। इस चेहरे के चलते ही आधुनिकता की पहचान बन पायी। इस पहचान को विश्व स्तर पर स्थापित करने वाले रवीन्द्रनाथ की प्रतिभा बहुमुखी है, जिसका जोड़ा खोजने के लिए कोई निकलता है, तो उसे फिर वहीं रवीन्द्रनाथ के पास आना पड़ता है। उनके लेखकीय व्यक्तित्त्व का पूर्ण विकास कथा–साहित्य में मिलता है। उन्होंने अपने उपन्यासों तथा कहानियों में समाज की विभिन्न समस्याओं का उचित विश्लेषण किया है। यह विश्लेषण न केवल भारतीय परंपरा को ध्यान में रखकर किया गया है बल्कि पश्चिम की सोच का भी

Scanned by CamScanner

तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत करके किया गया है। जब पूरी दुनिया यह चीख रही थी कि आधुनिकता का कोई विकल्प नहीं है, तब रवीन्द्रनाथ ने कहा कि चीखने से पहले आधुनिकता में कम–से–कम एक मानवीय चेहरा लगा लो। इस स्थापना के जरिए रवीन्द्रनाथ की यही उद्घोषणा थी कि यथार्थ को नयी पहचान देने की आवश्यकता है। अपने कथा–साहित्य में रवीन्द्रनाथ ने यथार्थ को नयी जान देने की कोशिश की है।

रवीन्द्रनाथ जैसे महान कथाकार को बंगला के कुछ आलोचकों ने मुख्य कथाकार के रूप में स्वीकार नहीं किया है। इन्हीं आलोचकों में शिशिर कुमार घोष जैसे विद्वान हैं, जिन्होंने रवीन्द्रनाथ के 'उपन्यास और कहानियां' शीर्षक में लिखा है– ''बंकिम या शरतचंद्र की तरह रवीन्द्रनाथ मुख्यतः कथाकार नहीं, पर कथा–साहित्य को उन्होंने दो नए आयाम दिए– मनोवैज्ञानिक और सामाजिक।'' उनका यह निबंध साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर' पुस्तिका में प्रकाशित है। यह पुस्तक पहली बार हिंदी में सन् 1996 में प्रकाशित हुई है। अब तक इस पुस्तक के आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सन् 1986 में इस शिशिरकुमार घोष ने यह निबंध बंगला में लिखा था। और इस निबंध के प्रकाशन से सिर्फ 15 साल पहले सुकुमार सेन की पुस्तक ''बंगला साहित्य का इतिहास'' इसी साहित्य अकादेमी द्वारा सन् 1971 में प्रकाशित हुई, जिस पुस्तक के मात्र तीन संस्करण प्रकाशित हुए।

इस पुस्तक में सुकुमार सेन ने रवीन्द्रनाथ को एक कहानीकार के रूप में जिस तरह प्रस्तुत किया है, वह अद्वितीय है; सुकुमार सेन ने लिखा है– ''रवीन्द्रनाथ सही अर्थ में बांग्ला–कहानी के जनक भी हैं (1891) और अभी तक सर्वोत्तम लेखक भी। उनकी कहानियां जीवन के निम्नतर क्षेत्रों से आनेवाले सामान्य नारी–पुरुषों से संबद्ध है। रवीन्द्रनाथ की कहानियों की संख्या लगभग सौ के करीब है और वे वैविध्यपूर्ण हैं।'' वैविध्यता रवीन्द्रनाथ की कहानियों के प्रणतत्त्व हैं। दरअसल कथा–साहित्य में विषयों तथा चरित्रों की दृष्टियों से विविधता का समन्वय होना स्वाभाविक है। पर रवीन्द्रनाथ ने अपने कथा–साहित्य में जिस तरह घटनाओं की विविधता को स्थापित करने में सफलता हासिल की है, ठीक उसी तरह अपने अनुभवों की विविधताओं को उपस्थित करने में कामयाबी अर्जित की है।

जहां एक कथाकार को अपने अनुभवों को स्थापित करने के लिए हजारों–हजार घटनाओं का चयन करना पड़ता है, वहीं रवीन्द्रनाथ ने अपने अनुभवों से घटनाक्रमों को ऊर्जस्वित किया है। रवीन्द्रनाथ के कथा–साहित्य में विविधता जिस रूप में प्रकट होती है, उसी तरह उनकी कहानी उद्घाटित होती है। रवीन्द्रनाथ की कहानी–कला पर रोशनी डालते हुए सुकुमार सेन ने सही लिखा है– ''रवीन्द्रनाथ की कहानियों में कथ्य और रूप की विविधता है और उनकी पहुंच प्रेम की भूमि से लेकर उनके अधिकार–क्षेत्र तक है। एक साहित्यिक विधा के रूप में रवीन्द्रनाथ की कहानियां स्पष्ट और आदर्श हैं, और उनकी तुलना किसी भी भाषा की सर्वोत्तम कहानियों से अच्छी तरह की जा सकती है।''

सिर्फ कहानियों के मसले पर ही नहीं बल्कि उपन्यास–कला की दृष्टि से रवीन्द्रनाथ ने 'गोरा', 'चोखेर बालि' जैसे उपन्यास लिखे। 'चोखेर बालि' सन् 1910 में

Scanned by CamScanner

प्रकाशित हुआ। रवीन्द्रनाथ ने सन् 1883 में 'बउ ठाकुरानी हाट' उपन्यास लिखा। इसका कथानक ऐतिहासिक होते हुए भी पारिवारिक ऊहापोह पर आधारित है। सन् 1885 में उनका 'राजर्षि' उपन्यास आया, जिसमें उन्होंने हृदय और बुद्धि का संघर्ष स्थापित किया है। भारतीय साहित्य पर 'चोखेर बालि' का प्रभाव सबसे अधिक पड़ा है। इस उपन्यास में उन्होंने मानव–चरित्रों की मनोविकृतियों का विश्लेषण यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत किया। 'नौका डूबी' का प्रकाशन सन् 1905 में हुआ। इसमें सामाजिक जीवन की समस्याओं को रेखांकित किया गया है। 'गोरा' रवीन्द्रनाथ का प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने देश की सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। सन् 1916 में 'चतुरंग' नामक उपन्यास छपता है इस उपन्यास में मन और आत्मा के बीच संतुलन की अनंत खोज निहित है। इसी साल उनका एक और प्रसिद्ध उपन्यास 'घरे बाइरे' प्रकाशित होता है। इस उपंन्यास में रवीन्द्रनाथ ने घर के भीतर और बाहर के सभी चलन–प्रचलन के अंतर्विरोध को प्रकट किया है। 'जोगाजोग' उनका प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास में दो युगों के टकराहट की गूंज सुनाई पड़ती है। यह उपन्यास सन् 1930 में छपता है। 'शेषेर कविता' रवीन्द्रनाथ का प्रेम पर आधारित उपन्यास है, जिसका प्रकाशन सन् 1929 में हुआ। 'दुई बोन' सन् 1933 तथा 'मालंच' सन् 1934 में प्रकाशित हुए। 'चार अध्याय' उपन्यास सन् 1934 में प्रकाशित हुआ। 'दुई बोन' में आंतरिक संघर्ष है। 'मालंच' में स्त्रियों के द्वंद्व को रेखांकित किया गया है तथा 'चार अध्याय' उपन्यास में रवीन्द्रनाथ ने स्पष्ट उद्घोष किया कि यदि सद्विवेक के विरुद्ध समाज में कुछ घटता है, तो उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। इस तरह संख्या और गुण की दृष्टि से रवीन्द्रनाथ के उपन्यास श्रेष्ठ हैं।

'जोगाजोग' रवीन्द्रनाथ का प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास में जमींदारी–व्यवस्था के टूटने की ओर संकेत जिस तरह है, ठीक उसी तरह यह भी बताने का संदेश है कि स्त्री के बिना समाज में परिवर्तन संभव नहीं है। धनोपार्जन करने की ललक किस तरह एक असंस्कृत समाज को पैदा करती है, जो धन के अलावा कुछ नहीं समझती है। इसका मार्मिक वर्णन इस उपन्यास में मिलता है। इस उपन्यास में कुमुदिनी मुख्य चरित्र है। उसके चरित्र का निर्माण असल में किस वातावरण में हो रहा है, उस वातावरण का चित्र इस उपन्यास में निहित है। इस उपन्यास के नामकरण के संबंध में उल्लेख करते हुए रवीन्द्रनाथ ने स्वयं लिखा है– ''साहित्य में जब नामकरण का मुहूर्त आता है, तब हम दुविधा में पड़ जाते हैं। साहित्य–रचना का स्वभाव विषयगत है अथवा व्यक्तिगत। पहली समस्या यही है। विज्ञान–शास्त्र में तो विषय ही सर्वेसर्वा है, वहां गुण–धर्म का परिचय ही एकमात्र परिचय है। मनोविज्ञान की पुस्तक के माथे पर यदि लिखा मिले; पत्नी के विषय में पति की ईर्ष्या तो सोच लूंगा कि विषय की व्याख्या के कारण सार्थक है। लेकिन यही नाम अगर 'ओयलो' नाटक पर लिखा मिलता तो मैं पसंद न कर पाता। क्योंकि यहां विषय प्रधान नहीं है, प्रधान है नाटक, अर्थात् कथावस्तु, रचनाशिल्प, चरित्र–चित्रण, भाषा, छंद, व्यंजना, नाट्य–रस आदि के मेल से निर्मित एक समग्र वस्तु।'' शीर्षक की सार्थकता विषय की अपेक्षा वस्तु में निहित है। 'जोगाजोग' उपन्यास में वस्तु की प्रमुखता विद्यमान है। यह बात स्वयं उपन्यासकार रवीन्द्रनाथ ने स्वीकार की है। उल्लेखनीय है कि यह उपन्यास धारावाहिक रूप से 'विचित्रा' पत्रिका में छप रहा था। पहले दो अंकों में उपन्यास 'तिन पुरुष' के नाम से छप रहा था; तीसरे अंक से रवीन्द्रनाथ ने इस उपन्यास का नाम बदल

Scanned by CamScanner

दिया और इसका नाम 'जोगाजोग' रख दिया। बंगला में इसका उच्चारण जोगाजोग होता है। इस उपन्यास का अनुवाद इलाचंद्र जोशी ने किया। इसका प्रकाशन सन् 1961 में साहित्य अकादेमी ने किया। इसके बाद अब तक छह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

रवीन्द्रनाथ ने इस उपन्यास के नाम बदलने के संबंध में नाम और कहानी के बीच संवाद प्रस्तुत करते हुए एक तर्क प्रस्तुत किया है कि कहानी जो कह रही है, उसे रखना जरूरी है, इस तथ्य को यहां प्रस्तुत करना अनुचित नहीं होगा, यथा– ''नाम बोला, ''आज से वाक्यों में, भावों में मुझे प्रमाणित करते चलना ही तुम्हारा धर्म है।'' कहानी ने कहा, ''रजिस्ट्री के खाते में मालिक के हुक्म से मैंने राजीनामें पर सही जरूर किया है, लेकिन आज मैं हजारों पाठकों के सामने खड़ी होकर उससे इंकार करना चाहती हूं।'' '' दरअसल गहराई में जाकर विचार किया जाए, तो स्पष्ट होगा कि यह इंकार सिर्फ किसी कहानी का नहीं है बल्कि यह इंकार कुमुदिनी का इंकार है।

रवीन्द्रनाथ ने साहस के साथ यह उद्‌घोष किया कि स्त्री को अपने शर्त पर जीने का अधिकार है। अपने अधिकारों के साथ जीना किसी वाद–प्रतिवाद का विषय नहीं है। यह जीवन की वस्तुनिष्ठ परिस्थिति है। इस परिस्थिति की मांग के अनुसार बढ़ना ही सबसे बड़ी बात है तथा जीने की सार्थकता है, जिसका आधार शिक्षा है। इस शिक्षा के आधार पर ही दुनिया को बदला जा सकता है। इसके लिए रवीन्द्रनाथ ने स्त्री–शिक्षा पर जोर दिया है। यह अलग सवाल है कि शिक्षित स्त्री–समाज के सामने एक अलग किस्म की समस्याएं हैं, जिनका रहना स्वभाविक है। लेकिन अनंत समस्याओं से जूझने की ताकत शिक्षित स्त्री सहज रूप में अर्जित करती हैं, जो जीवन की विजय–पताका है। इसके बिना समाज आगे नहीं बढ़ पाता है; हालांकि 21वीं सदी में भी सामंती सोच के अवशेषों ने विभिन्न तरह की विसंगतियों को जन्म दिया है। इन विसंगतियों से जूझने की ताकत शिक्षित समाज में है; क्योंकि यह समाज संलाप के जरिए तर्क–विवेक के आधार पर आगे बढ़ने का रास्ता खोज निकालता है। रवीन्द्रनाथ ने बिल्कुल सही लिखा है कि जीवन में कठिन काम करना ही सहज रास्ते को चुनना है; जैसा कि 'जोगाजोग' उपन्यास में कुमुदिनी के पूछने पर उसके भैये ने जवाब दिया है, जिसे यहां प्रस्तुत करना उचित है– ''लक्ष्मी रानी की तरह शांत होकर बैठी रहो, धैर्य के साथ समय की प्रतीक्षा करो! याद रखो, यह भी एक बहुत बड़ा काम होता है। तूफान आने पर नाव को ठीक रखना जितने महत्त्व का काम होता है, उतना ही जरूरी काम होता है चित्त को स्थिर रखना। मेरा इसराज ले आ और तनिक बजा!'' कुमुदिनी बार–बार अपने भैये से अनुग्रह करती है कि वह कठिन काम करना चाहती है। उसके भैये ने उत्तर दिया– ''दस्तावेज में सही करने की अपेक्षा इसराज बजाना अत्यंत कठिन है। ले आ, जा!'' कुमुदिनी एक तरह से शिक्षित स्त्री है, जो अच्छी तरह महसूस करती है कि वास्तविकता को किस आधार पर स्वीकार किया जाय, उसके सामने कई सवाल उठते हैं। उसके मन में द्वंद्व चलता है, जो अनंत ढंग से जारी रहता है और इस रूप में एक प्रश्न को सामने रखता है– '' मीराबाई ने अपने वास्तविक पति को अंतर में पा लिया था, इसी कारण वह समाज द्वारा अनुमोदित पति को त्यागने में समर्थ हुई थी। पर संसार की अवज्ञा करने का उतना बड़ा अधिकार क्या मुझे है ?

Scanned by CamScanner

कायरता से समाज नहीं चल सकता है; यह बात तब उत्पन्न होती है, जब सवाल उठता है कि भय का निराकरण किस रूप में किया जाए, भय के कारणों का अंत कायरता त्यागने से ही संभव है। जब तक भय बना रहता है, तब तक अधिकार–बोध उत्पन्न नहीं हो पाता है। वैसे अधिकार–बोध उत्पन्न होने से भी एक खतरा पैदा होता है, और दायित्व लेने में भी एक प्रलोभन होता है। यह प्रलोभन उसी अवशेष की मौजूदगी का प्रमाण है, जो अवशेष समाज को आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न करता है। यह अवशेष सामंती सोच का अवशेष है, जो निर्णय लेने में गतिरोध की भूमिका अदा करता है। यही वह बिंदु है, जहां शिक्षा की भूमिका असरदार दिखती है। जब तक कुमुदिनी निर्णय लेने में ऊबडूब खाती है, तभी तक उसके सामने कठिनाईयां हैं। जब कुमुदिनी अपने अनुभवों से शिक्षा लेने लगती है; तब उसकी सारी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं। चिंताओं के समाप्त होते ही सुख नहीं मिलता है। सुख पाना तो गति उत्पन्न करना है। समाज के उपद्रवी जीने कहां देते हैं। और ऐसी स्थिति में लज्जा, संकोच, भय को त्यागना जरूरी होता है, तभी जाकर कोई रास्ता मिलता है। इस रास्ते में अशांति और अनिष्ट की संभावना नहीं होती है, यहां भी साहस की जरूरत होती है, जो परिस्थिति ही पैदा करती है। मान–अपमान से ऊपर वही उठ सकता है, जो परिस्थितियों के हमलों को झेलता है। घोषाल और चटर्जी दो वंशों के झगड़ों के बीच एक कुमुदिनी किस तरह पूरी तरह बर्बाद हो रही है, इसका जीता–जागता चित्रण करना ही रवीन्द्रनाथ का मकसद नहीं है बल्कि दो युगों की टकराहट के बीच बनते मूल्यों की समाज की भावी पीढ़ी की सुरक्षा किस रूप में की जाए, इस सवाल की ओर संकेत करना ही रवीन्द्रनाथ का मकसद है। कथा समाप्त होने के बावजूद यह समझ में नहीं आता कि आखिर क्यों पलंग के नीचे टॉम फफक–फफक कर रो रहा है; जैसा कि उपन्यास में लिखा गया है– ''कुमुदिनी को जाते उसने देखा था, कुछ बात उसके मन में थी, पर ठीक से समझ नहीं पा रहा था।'' बंगला कथा–समीक्षकों ने इस उपन्यास के बारे में यह कहा कि यह उपन्यास नारीवादी है। इसमें नारी के अधिकारों पर किस तरह हमले हो रहे हैं, उसका जिक्र है। खासकर संस्कृतवान और असंस्कृतवान व्यक्तियों के बीच ठने झगड़ों के चलते एक स्त्री के जीवन को किस तरह नरक बना दिया जाता है, इसका जिक्र उपन्यास में हुआ है। रवीन्द्रनाथ के कथा–साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि मुख्य कथा के पीछे कई उपकथाएं चलती हैं, जो न केवल मुख्य कथा की गति को तेज करने में एक उत्प्रेरक की भूमिका अदा करती हैं बल्कि उन उपकथाओं में जो दार्शनिक भाव है, उन्हें समझने में भी सहूलियत होती है। अनुभव एक समय में किस तरह दार्शनिकता के स्तर को हासिल कर लेता है, इसका जीता–जागता दृष्टांत यह 'जोगाजोग' उपन्यास है। दो दर्शनों के बीच संबंध स्थापित करने का संकेत है; यह संकेत अन्यत्र प्रायः दुर्लभ ही है।

रवीन्द्रनाथ की कहानी–कला का प्रभाव–क्षेत्र व्यापक है। केवल बंगला साहित्य बल्कि अन्य भारतीय साहित्य पर भी उनकी कहानी–कला का प्रभाव पड़ा है। उनकी कहानियों के संबंध में सोमनाथ मैत्र ने लिखा है– ''बंगाल में कहानी–कला के क्षेत्र में उनसे पहले कोई नहीं था और किसी विदेशी लेखक का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अपनी कहानियों में वे नितांत और अदभुत ढंग से स्वयं हैं। यथार्थ में प्रवेश करने की सूक्ष्म दृष्टि से समन्वित उनकी सजीव कल्पना, सार तत्त्वों को ग्रहण करने की क्षमता

Scanned by CamScanner

अतिश्योक्ति और अति–भावुकता से दूर रहने की प्रवृत्ति, उनकी विशाल मानवता, अनृत अन्याय के प्रति उनकी असहिष्णुता तथा उनकी अनुपम रचनात्मक क्षमता आदि उनकी प्रतिभा के विशिष्ट गुणों के प्रदर्शन की दृष्टि से उनकी कहानियां केवल उनकी कविता से पीछे हैं; और फिर वे इस दृष्टि से भी रोचक हैं कि उनके आस–पास के वातावरण की तथा उन विचार और भावों तथा उन समस्याओं की झलक मिलती है; जिन्होंने उनके जीवन में समय–समय पर उनके मन को प्रभावित किया।''

रवीन्द्रनाथ प्रतिभा के धनी हैं। सृजन–क्षेत्र में मौलिकता को प्रविष्ट करना तथा उसे सूक्ष्म दृष्टि प्रदान करना रवीन्द्रनाथ की कहानी–कला की सबसे बड़ी विशेषता है। उनकी कहानी–कला सहजता के उन्मेष को प्रधानता प्रदान करते हुए निजस्व को विश्व–स्तर पर स्थापित करने की कोशिश करती है, जो कोशिश लगातार समाज को जागरुक बनाने की कोशिश है। दरअसल यह एक संघर्ष है। इस संघर्ष की विशेषताएं न केवल वातावरण के सृजन तक सीमित रहती है बल्कि रवीन्द्रनाथ के पात्र युद्ध के लिए वातावरण तैयार करते हैं। यही कारण है कि उनके कथा–साहित्य में जीवन के विभिन्न अनुभवों और विविध सच्चाइयों के दर्शन होते हैं। जीवन के कई पहलू सामने आते हैं। पात्र का सरोकार समाज से किस तरह का होना चाहिए; इस संदर्भ में भी रवीन्द्रनाथ ने एक अद्वितीय बानगी प्रस्तुत की है। उनकी कहानियां शुरू से लेकर अब तक एक दार्शनिक भाव का वहन करती हैं; उनकी कथा चाहे खत्म हो जाए, पर कथा का असर बना रहेगा। ऐसी विशेषताएं अन्यत्र कम दिखती हैं।

रवीन्द्रनाथ की कहानियों को पढ़ने से यह भी महसूस होता है कि कहानी समाप्त हो गयी है, पर कौतूहलता नए सिरे से पैदा हो जाती है। शुरू–शुरू में उनकी कहानी साधारण ढंग से आरंभ होती है; पर शिखर पर पहुंचते–पहुंचते समाज को भीतर–ही–भीतर आलोड़ित कर देती है। इस आलोड़न में समाज और संस्कृति के ही सवाल नहीं होते हैं बल्कि उन सवालों की ओर भी संकेत किया जाता है, जिनके उत्तर आज तक उपलब्ध नहीं हो सके यानी कि रवीन्द्रनाथ ने आधुनिक विचार को मानवोपयोगी बनाने का अद्‌भुत प्रयास किया है। अति साधारण को असाधारण बनाने की अद्‌भुत कला की वजह से रवीन्द्रनाथ की दृष्टि बंगाल के गांवों पर गयी, जहां उन्होंने अपनी कहानियों का रसद जुटाया। बंगला साहित्य के विद्वान भूदेव चौधरी ने लिखा है– ''...बंगाल के सामान्य ग्रामवासी मनुष्य के जीवन का उन्होंने पहली बार मुख्य रूप से अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे साहित्य में जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया। इस युग में, आधुनिक भारतीय साहित्य मात्र पाश्चात्य शिक्षित नागरिक जन का साहित्य है, जो उनके द्वारा उन्हीं के लिए रचा गया है। गांव का आदमी और गांव का जीवन यहां श्रेणी–मुक्त नहीं। इस दृष्टि से अनादृत जीवन को प्राणों के दर्द के साथ सामने लानेवाले बांगला साहित्य के एकमात्र अग्रदूत रवीन्द्रनाथ ही हैं; और इसके लिए आलोच्य पर्याय की कहानियां ही माध्यम बनीं।''

यह सच है कि रवीन्द्रनाथ की कहानियों में झूठ या अर्द्धसत्य नही है, जो है वह सच है। इस बात का उदाहरण उनकी कहानी 'पत्नी का पत्र' है। इस कहानी के संदर्भ में रवीन्द्रनाथ ने लिखा कि स्त्रियों का पक्ष लेते हुए 'पत्नी का पत्र' कहानी लिखी। इस समाज में स्त्री का पक्ष लेना उचित है। उत्पीड़न और निरादर देखते ही रवीन्द्रनाथ की

Scanned by CamScanner

कहानी–कला उद्घोष करती है कि इस पुरुष–प्रधान में नारियों का इतना निरादर और निर्यातन क्यों ? 'पत्नी का पत्र' एक द्रवीभूत करने वाली कहानी है। यह कहानी चिट्ठी के शिल्प पर आधार पर लिखी गयी है इस कहानी में पति को पत्र लिखती हुई मृणाल ने यह साबित कर दिया कि पुरुष प्रधान समाज में मृणाली मृणाल बनने के लिए अभिशप्त हैं। इस कहानी में मृणाल ने अपने ससुराल में गुजारे गए समय में घटने वाले चंद घटनाक्रमों को इस तरह प्रस्तुत किया कि एक पुरुष प्रधान समाज की असलियत खुलकर सामने आ जाती है। मृणाल ने इस कहानी में कहा है– ''जब आदम सम्मान घट जाता है, तब अनादर में अन्याय भी नहीं दिखाई देता। इसलिए उसकी पीड़ा नहीं होती है। यही कारण है कि नारी दुःख का अनुभव करने में ही लज्जा पाती है। इसलिए मैं कहती हूं, अगर तुम लोगों की व्यवस्था यही है कि नारी को दुःख पाना ही होगा तो फिर जहां तक संभव हो उसे अनादर में रखना ही ठीक है। आदर से दुःख की व्यवस्था और बढ़ जाती है।''

'अपरिचिता' रवीन्द्रनाथ की एक मार्मिक कहानी है। इस कहानी में यह स्पष्ट बताया गया है कि किस तरह एक नारी को अपरिचित बना दिया जाता है। इस कहानी का उपसंहार इन शब्दों के साथ रवीन्द्रनाथ ने किया है; यथा– '' ...ओ री अपरिचिता! तुम्हारा परिचय पूरा नहीं हुआ, पूरा होगा भी नहीं, किंतु मेरा भाग्य अच्छा है, मुझे जगह मिल चुकी है।'' इस कहानी में कल्याणी लड़कियों को शिक्षा देने का व्रत लेती है। इससे यही स्पष्ट होता है कि रवीन्द्रनाथ स्थापित करना चाहते हैं कि स्त्री–शिक्षा पर जोर देना अत्यंत जरूरी है। 'स्त्री शिक्षा' नामक निबंध में उन्होंने लिखा है– ''अपने उद्यम एवं शक्ति से स्वयं को मुक्त न करने पर दूसरा कोई मुक्ति दे नहीं सकता। दूसरे जिसे मुक्ति कहकर उपस्थित करते हैं वह बंधन की ही दूसरी मूर्ति होती है। पुरुष ने स्त्री–शिक्षा का जो ढांचा गढ़ा है वह पुरुष के खेलने लायक गुड़िया गढ़ने का सांचा है।'' विचार की दृष्टि से 'मान–भंजन' कहानी मोहक है। अवास्तविकता से दूर रहने का प्रतिवाद ही इस कहानी का मुख्य स्वर है। जीवन को वास्तविकता के धरातल पर खड़ा करना सबसे बड़ी जद्दोजहद है। इसलिए कि इस जीवन में न कोई सुख है और न मृत्यु में कोई सांत्वना। मानवीय वेदना का संचार 'दीदी' कहानी में हुआ है। इस कहानी में रवीन्द्रनाथ ने मनोभावों के द्वंद्व को व्यक्त किया है। यदि पुरुष अत्याचारी या अन्यायी है, तो उससे एक नारी को किस तरह की विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है ? इस सवाल को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करते हुए रवीन्द्रनाथ ने यह सिद्ध करने प्रयास किया है कि जीवन में स्नेह की महत्ता है। इस संबंध में उनकी यही राय है कि स्नेह जितना गोपन होता है, एकांत होता है, वह उतना ताकतवर होता है।

'सजा' कहानी रवीन्द्रनाथ की एक ऐसी कहानी है, जहां पुरुषों के चाल–चलन के चलते अदालत तक ही किसी स्त्री को नहीं पहुंचना पड़ता है; बल्कि प्राणदंड भी मिलता है। एक स्त्री–जीवन के साथ पुरुष–समाज किस हद तक नौटंकी करता है, जिसका ज्वलंत उदाहरण 'सजा' कहानी है। रवीन्द्रनाथ की कहानी घटना के पीछे चलने वाली कहानी है; उनकी घटना एक के बाद एक विचार को सामने रखती हैं इस विचार को सामने रखने से सामाजिक चित्र का यथार्थ समझ में आता है; जहां परिस्थितियों को बदलने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ता है। रवीन्द्रनाथ की कहानियों में स्त्री पात्र मुखर हैं,

Scanned by CamScanner

जो अपने अधिकारों की रक्षा करने के साथ–साथ परिस्थितियों के सच को आलोचनात्मक दृष्टि से देखती हैं। इसका यही निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा; स्त्री के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा ही स्त्री–जीवन को रोशन कर सकती है। इसलिए रवीन्द्रनाथ ने अपने निबंध 'स्त्री–शिक्षा' में स्त्री के संबंध में स्पष्ट लिखा है– '' असली बात यह है कि स्त्री होना, मां होना, स्त्रियों का स्वभाव है, दासी होना नहीं। प्रेम करने का अंश स्त्रियों के स्वभाव में अधिक है– ऐसा न होता तो संतान बड़ी नहीं हो सकती थी, संसार टिक नहीं सकता था। स्नेह के कारण मां संतान की सेवा करती है, उसमें दायित्व की भावना नहीं; प्रेम के कारण ही स्त्री स्वामी की सेवा करती है, उसमें दायित्व की भावना नहीं।''

Scanned by CamScanner